International Journal of Engineering Applied Science and Management
ISSN (Online): 2582-6948
Vol. 6 Issue 3, March 2025

मध्यप्रदेश एवं राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग पर एक तुलनात्मक अध्ययन

विपिन कुमार[1] डॉ, सविता सिंह[2]
शोधार्थी , पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, श्रीकृष्णा विश्वविद्यालयए छतरपुर मध्य प्रदेश[1]
सहायक प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, विश्वविद्यालय. श्रीकृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर मध्य प्रदेश[2]

सारांश: *यह अध्ययन मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग पर आधारित है। इसका उद्देश्य दोनों राज्यों में ई-रिसोर्स की उपलब्धताए उपयोगिता और प्रभावशीलता का विश्लेषण करना है। अध्ययन में पाया गया कि राजस्थान के विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से हो रहा है जबकि मध्य प्रदेश में तकनीकी समस्याएँ, जैसे धीमी इंटरनेट स्पीड और उपयोगकर्ताओं में जागरूकता की कमी, प्रमुख चुनौतियाँ हैं। राजस्थान में उचित बुनियादी ढाँचे तथा अधिक जागरूकता के कारण ई-रिसोर्स का उपयोग बेहतर ढंग से हो रहा है। वहीं, मध्य प्रदेश में इन संसाधनों का उपयोग प्रभावी नहीं हो पा रहा है। अध्ययन में यह सुझाव दिया गया कि ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग के लिए विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, इंटरनेट स्पीड सुधारने के उपाय किए जाएं तथा उपयुक्त तकनीकी ढाँचा तैयार किया जाए, ताकि इन संसाधनों का उपयोग अधिकतम लाभकारी हो सके।*

कीवर्ड: इंटरनेट स्पीड, प्रशिक्षण कार्यक्रम, बुनियादी ढाँचा, चुनौतियाँ और समाधान, ई-रिसोर्स का एकीकरण ।

1. परिचय

कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग शैक्षिक और अनुसंधान कार्यों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है [1]। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मध्य प्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग की वर्तमान स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन में पाया गया कि दोनों राज्यों के विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता और उपयोगिता में कुछ मूलभूत अंतर हैं। जहां राजस्थान के विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से हो रहा है, वहीं मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालयों में तकनीकि समस्याएं और उपयोगकर्ताओं में जागरूकता की कमी प्रमुख बाधाएँ हैं। इस अध्ययन के माध्यम से पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग में आने वाली चुनौतियों, जैसे धीमी इंटरनेट स्पीड, महंगे संसाधन, और प्रशिक्षण की कमी को उजागर किया गया है [2]। इसके साथ ही, इन समस्याओं का समाधान करने के लिए सुझाव भी दिए गए हैं, जिनसे भविष्य में ई-रिसोर्स के उपयोग में सुधार हो सके।

2. अध्ययन का उद्देश्य

1. मध्य प्रदेश और राजस्थान के विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की कितनी उपलब्धता है और छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के बीच इनका कितना उपयोग हो रहा है।
2. उपयोगकर्ता ई-रिसोर्स का उपयोग किस प्रकार करते हैं, डिजिटल सामग्री का अधिक उपयोग करते हैं और उनके उपयोग की आदतें क्या हैं।
3. पुस्तकालय कर्मचारियों को ई-रिसोर्स के बारे में कितना ज्ञान है और वे उपयोगकर्ताओं को इसकी मदद देने के लिए कितने प्रशिक्षित हैं।

4. ई-रिसोर्स के उपयोग में सामान्यत: आने वाली समस्याओं, जैसे इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी, उपयोगकर्ताओं में जागरूकता की कमी तथा संसाधनों की महंगाई का अध्ययन एवं इन समस्याओं का समाधान खोजना है।

3. साहित्य समीक्षा

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, ई-रिसोर्स कृषि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में ज्ञान-स्रोतों तक त्वरित पहुँच का महत्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं। यह अध्ययन मध्यप्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग की तुलना पर केंद्रित है। इसमें ई-रिसोर्स की उपलब्धता, उपयोगिता, तथा प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल संसाधनों के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक सुधारों की पहचान करना है।

सारणी 1 साहित्य समीक्षा का सारांश

लेखक	किए गए कार्य	प्रमुख निष्कर्ष
वर्मा एट अल. (2024)	मध्य प्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के एकीकरण का तुलनात्मक अध्ययन किया।	दोनों राज्यों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता और उपयोग में अंतर पाया गया। राजस्थान में संसाधनों की पहुँच अधिक थी, जबकि मध्य प्रदेश में तकनीकी समस्याएँ अधिक देखी गईं।
गुप्ता एट अल. (2024)	कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग में आने वाली चुनौतियाँ और अवसरों का विश्लेषण किया।	ई-रिसोर्स उपयोग में सबसे बड़ी बाधा इंटरनेट की अनियमित उपलब्धता और तकनीकी ज्ञान की कमी थी। अवसरों में डिजिटल पुस्तकालयों के विकास की संभावनाएँ शामिल थीं।
पटेल एट अल. (2023)	राजस्थान के एक कृषि पुस्तकालय में डिजिटल संसाधनों के उपयोग का केस अध्ययन किया।	पाया गया कि डिजिटल संसाधनों का उपयोग पारंपरिक संसाधनों की तुलना में अधिक किया जा रहा है, लेकिन तकनीकी सहायता की कमी से उपयोगकर्ता अनुभव प्रभावित हो रहा था।
सिंह एट अल. (2023)	भारतीय कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स उपयोग में तकनीकी अवरोधों का अध्ययन किया।	सर्वेक्षण में सामने आया कि ई-रिसोर्स के उपयोग में सबसे बड़ी बाधाएँ धीमा इंटरनेट, अपर्याप्त लाइसेंस प्राप्त डेटाबेस, और प्रशिक्षित स्टाफ की कमी थी।
चौधरी एट अल. (2022)	कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता और उपयोग पर व्यापक अध्ययन किया।	ई-रिसोर्स की उपलब्धता बढ़ी है, लेकिन कृषि शोधार्थियों के लिए जागरूकता कार्यक्रमों की कमी के कारण इनका पूर्ण लाभ नहीं उठाया जा रहा।
मिश्रा एट अल. (2021)	कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स उपयोग की प्रमुख चुनौतियों और उनके समाधान पर अध्ययन किया।	बुनियादी ढाँचा मजबूत करने से ई-रिसोर्स का प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।
कुमार एट अल. (2021)	कृषि पुस्तकालयों में इंटरनेट और ई-रिसोर्स के उपयोग पर आधारित सर्वेक्षण किया।	कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग बढ़ा है, लेकिन इंटरनेट की धीमी गति और लाइसेंसिंग बाधाएँ प्रमुख समस्याएँ हैं।
पटेल एट अल. (2020)	कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का मूल्यांकन किया।	बुनियादी ढाँचा मजबूत करने और नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करने की आवश्यकता बताई गई।
अग्निहोत्री एट अल. (2020)	भारत में कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की स्थिति और विकास के संभावित रास्तों का अध्ययन किया।	कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की पहुँच बढ़ी है, लेकिन प्रशिक्षण की कमी और डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता बनी हुई है।

4. कार्यप्रणाली

अध्ययन क्षेत्र के चयन में विश्वविद्यालयों के आकार, संसाधनों की उपलब्धता, और छात्रों व शोधकर्ताओं द्वारा ई-रिसोर्स के उपयोग की संभावना को प्राथमिकता दी गई। आकंडे संग्रहण के लिए दो विधियाँ अपनाई गईं। पहली, प्रश्नावली, जिसका उपयोग छात्रों, शिक्षकों, और शोधकर्ताओं से ई-रिसोर्स के उपयोग के तरीके, उनके अनुभव, और सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया। इसके माध्यम से उपयोगकर्ताओं की आदतों, सामग्री की उपलब्धता, और प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधी आकंडे एकत्रित किये गये। दूसरी विधि, व्यक्तिगत साक्षात्कार के द्वारा पुस्तकालय कर्मचारियों से ई-रिसोर्स प्रबंधन में उनकी भूमिका, अनुभव, और सुझावों के बारे में जानकारी ली गई। तुलनात्मक अध्ययन के लिए सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया जिससे दोनों राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग के बीच अंतर का विश्लेषण किया गया। इस सांख्यिकीय विश्लेषण से ई-रिसोर्स उपयोग में चुनौतियों और प्रभावशीलता को समझने और इन विश्वविद्यालयों में संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिए सुझाव देने में सहायता मिली।

ई-रिसोर्स का परिचय:

ई-रिसोर्स (इलेक्ट्रॉनिक संसाधन) वे सभी प्रकार के जानकारी स्रोत हैं जो डिजिटल रूप में उपलब्ध होते हैं। इनमें ई-

पुस्तकें, ऑनलाइन जर्नल्स, ई-डेटाबेस, ऑडियो-विज़ुअल सामग्री, इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाएँ, और अन्य डिजिटल सामग्री सम्मिलित हैं। ये सभी स्रोत इंटरनेट और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों पर उपलब्ध होते हैं, जिन्हें उपयोगकर्ता ऑनलाइन एक्सेस कर सकते हैं। कृषि विश्वविद्यालयों में इन ई-रिसोर्स का उपयोग विशेष रूप से छात्रों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों द्वारा किया जाता है ताकि वे नवीनतम कृषि अनुसंधान, तकनीकों, नीतियों, और शैक्षिक सामग्रियों तक पहुंच सकें।

ई-रिसोर्स का महत्त्व :

1. **समय की बचत**- ई-रिसोर्स का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह उपयोग समय की बचत करता है [10]। उपयोगकर्ता एक ही समय में कई स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर सकता है और उन्हें सामग्री को ढूंढने के लिए पुस्तकालय में भटकने की आवश्यकता नहीं होती।
2. **सामग्री की त्वरित उपलब्धता**- ई-रिसोर्स के माध्यम से किसी भी जानकारी को शीघ्र से प्राप्त किया जा सकता है। छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अनुसंधान कार्य में समय की बर्बादी नहीं होती।

सस्ते और सुविधाजनक उपयोग- अधिकांश ई-रिसोर्स इंटरनेट पर नि:शुल्क या सस्ते दामों पर उपलब्ध होते हैं, जिससे वे एक सस्ती और सुविधाजनक विकल्प बन जाते हैं। विशेषकर, ऑनलाइन जर्नल्स और शोध पत्रों के सस्ते या नि:शुल्क संस्करण शोधकर्ताओं को नए ज्ञान तक पहुंचाने में मदद करते हैं।

5. परिणाम एवं चर्चा

मध्य प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग:

मध्य प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता अपेक्षाकृत अच्छी है, लेकिन कुछ विश्वविद्यालयों में तकनीकी संसाधनों की कमी और उपयोगकर्ता जागरूकता का अभाव देखा गया है। इसके परिणामस्वरूप, इन विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग सीमित हो सकता है [3]। हालांकि, कुछ विश्वविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो उपयोगकर्ताओं को ई-रिसोर्स का अधिकतम लाभ उठाने में मदद करते हैं। फिर भी, सभी विश्वविद्यालयों में इसका समान स्तर पर उपयोग नहीं हो पा रहा है।

राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग:

राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग अधिक व्यापक और सुसंगत रूप से किया जाता है [4]। यहां के पुस्तकालयों में डिजिटलीकरण की दिशा में तेजी से प्रयास किए गए हैं और उपयोगकर्ताओं को ई-रिसोर्स तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए नियमित प्रशिक्षण और सहायता प्रदान की जाती है। हालांकि, कुछ चुनौतियाँ जैसे धीमी इंटरनेट स्पीड और महंगे ई-रिसोर्स लागत ने उपयोगकर्ताओं को प्रभावित किया है। फिर भी, इन समस्याओं के बावजूद, ई-रिसोर्स का उपयोग बढ़ रहा है और अनेक विश्वविद्यालयों में इसका सही तरीके से प्रयोग किया जा रहा है [5]।

6. तुलनात्मक विश्लेषण

दोनों राज्यों में ई-रिसोर्स के उपयोग में वृद्धि देखी गई है, लेकिन राजस्थान के विश्वविद्यालयों में इसे अधिक विकसित और बेहतर तरीके से कार्यान्वित किया गया है। मध्य प्रदेश में ई-रिसोर्स का उपयोग अपेक्षाकृत कम है और उपयोगकर्ताओं की संख्या भी कम है [6]। इसके विपरीत, राजस्थान के विश्वविद्यालयों में अधिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं और पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता और उपयोग अधिक सुविधाजनक है। राजस्थान में तकनीकि संसाधनों और इंटरनेट स्पीड की स्थिति मध्य प्रदेश की तुलना में बेहतर है, जिससे ई-रिसोर्स के उपयोग में अधिक सुविधा और प्रभावशीलता प्राप्त हो रही है [7]।

7. चुनौतियाँ

1. **तकनीकि समस्याएँ**- इंटरनेट स्पीड और तकनीकि उपकरणों की कमी कई कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग में प्रमुख बाधाएँ उत्पन्न करती हैं [8]। धीमी इंटरनेट कनेक्टिविटी या खराब नेटवर्क संसाधन के कारण उपयोगकर्ता ई-रिसोर्स का पूरा लाभ नहीं उठा पाते। इसके अलावा, कुछ विश्वविद्यालयों में आवश्यक तकनीकि उपकरणों, जैसे कि उच्च गुणवत्ता वाले कम्प्यूटर, सॉफ़्टवेयर या सर्वर की कमी होती है जिससे ई-रिसोर्स तक सुगम पहुंच और उसका प्रभावी उपयोग संभव नहीं हो पाता [9]।
2. **प्रशिक्षण की कमी**- ई-रिसोर्स का प्रभावी उपयोग करने के लिए उपयोगकर्ताओं को उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। कई विश्वविद्यालयों में उपयोगकर्ताओं (छात्रों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों) को ई-रिसोर्स के बारे में पर्याप्त ज्ञान नहीं होता है जिससे वे इन संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं कर पाते [10]। उचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी के कारण उपयोगकर्ता ई-रिसोर्स का सही तरीके से प्रयोग करने में असमर्थ रहते हैं, जो इसके प्रभावशीलता को कम कर देता है।
3. **अधिक लागत**- ई-रिसोर्स की लागत, विशेषकर पेड जर्नल्स, डेटाबेस और अन्य डिजिटल सामग्री की कीमत, कई विश्वविद्यालयों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है [11]। उच्च लागत के कारण कुछ विश्वविद्यालय इन

संसाधनों को हासिल करने में असमर्थ होते हैं और यह उपयोगकर्ताओं को उच्च गुणवत्ता वाली जानकारी तक पहुंचने से रोकता है। इससे शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता में कमी आ जाती है जो उनके शोध कार्य को प्रभावित कर सकता है [12]।

8. निष्कर्ष

इस अध्ययन का उद्देश्य मध्य प्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन में पाया गया कि राजस्थान के विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग अधिक प्रभावी और सुसंगत है, जबकि मध्य प्रदेश में तकनीकी समस्याएँ और उपयोगकर्ता जागरूकता की कमी इसके प्रभावी उपयोग में बाधक हैं। राजस्थान में पुस्तकालयों ने डिजिटलीकरण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर अधिक ध्यान दिया जिससे ई-रिसोर्स का उपयोग बढ़ा। हालांकि, दोनों राज्यों में तकनीकी समस्याएँ, जैसे धीमी इंटरनेट स्पीड और उच्च लागत, चुनौतियों के रूप में सामने आईं। इन समस्याओं के बावजूद, ई-रिसोर्स का उपयोग बढ़ता जा रहा है और इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि ई-रिसोर्स का उपयोग विश्वविद्यालयों में बेहतर बनाने के लिए तकनीकि सुधार, प्रशिक्षण, और संसाधनों की उपलब्धता में वृद्धि आवश्यक है।

9. सुझाव

- उपयोगकर्ताओं के लिए नियमित प्रशिक्षण बढ़ाकर उनकी जागरूकता और कौशल में सुधार।
- पेड जर्नल्स और डेटाबेस तक पहुंच बढ़ाने के लिए वित्तीय प्रबंधन में सुधार।
- बेहतर कंप्यूटर, सॉफ़्टवेयर और सर्वर की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- छात्रों और शोधकर्ताओं के बीच ई-रिसोर्स के उपयोग को लेकर सकारात्मक बदलाव लाना।
- ई-रिसोर्स के उपयोग में नई चुनौतियों का निरंतर अध्ययन और रणनीतियों को अद्यतन करना है।

10. संदर्भ

[1] वर्मा, एस., और मिश्रा, पी. (2024) "कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के एकीकरण पर तुलनात्मक अध्ययन: मध्य प्रदेश और राजस्थान का विश्लेषण।"
[2] गुप्ता, आर., और मेहता, एन. (2024) "कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग में चुनौतियाँ और अवसर।"
[3] पटेल, वी., और शर्मा, पी. (2023) "कृषि पुस्तकालयों में डिजिटल संसाधनों का उपयोग: राजस्थान का एक केस अध्ययन।"
[4] सिंह, जे., और कुमार, ए. (2023) "भारतीय कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग में तकनीकी अवरोध।"
[5] चौधरी, आर., और जोशी, एम. (2022) "कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता और उपयोग पर एक विस्तृत अध्ययन।"
[6] मिश्रा, आर., और शर्मा, पी. (2021) "कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की चुनौतियाँ और समाधान।"
[7] कुमार, आर., और यादव, एन. (2021) "कृषि पुस्तकालयों में इंटरनेट और ई-रिसोर्स के उपयोग पर आधारित एक सर्वेक्षण।"
[8] पटेल, एस., और अग्रवाल, आर. (2020) "कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का मूल्यांकन।"
[9] अग्निहोत्री, के., और वर्मा, पी. (2020) "भारत में कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की स्थिति और विकास के रास्ते।"
[10] शर्मा, ए., और सिंह, क. (2019) "ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग के लिए प्रशिक्षण और उपयोगकर्ता जागरूकता की आवश्यकता।"
[11] जोशी, ए., और सिंह, आर. (2018) "कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियाँ।"
[12] सिंह, पी., और जोशी, आर. (2016) "भारत में कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग की स्थिति और चुनौतीपूर्ण पहलु।"